इस रोग को अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे :- काटा, गोट कटारल फीवर, मुख शोथ निमोनिया, आंत्रशोथ काम्लेक्स, बकरी प्लेग, और पी॰पी॰आर। यह बीमारी एक तीव्र मार्बिली विषाणु से होती है। इस विषाणु का संक्रमण रोग ग्रस्त भेड़ / बकरी से स्वस्थ पशुओं मे तेजी से फैलता है। पालतु पशु में मुख्यतया भेड़ों व बकरियों का रोग हैं। सभी आयु वर्ग और दोनों ही लिंगों के पशु इस रोग से प्रभावित होते हैं। छोटे बच्चे इस रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, अत: उनमें मृत्युदर भी अधिक होती है। रोगी पशु से स्वस्थ पशु के बीच मुख्यतया सम्पर्क द्वारा विषाणु संचारित होते हैं। रोग उत्पन्न करने में पशुओं के चारे-दाने, भोजन के बर्त्तन अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने हेतु प्रयुक्त वाहनों द्वारा अप्रत्यक्ष सम्पर्क की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। अधिकतर संक्रमण श्लेष्म बूँदों को श्वास द्वारा अन्दर ले जाने से होते हैं।

महामारी के लक्षण :

इस बीमारी के दौरान रोग ग्रसित भेड़ एवं बकरियों को तेज बुखार आता है। मुँह के अन्दर एवं जीभ में छाले पड़ जाते हैं तथा तेज दस्त एवं निमोनिया के लक्षण उत्पन्न होते हैं। रोग ग्रस्त बकरी / भेड़ चारा / दाना खाना कम या बन्द कर देती हैं। नाक से पहले पानीनुमा एवं बाद में गाढ़ा स्त्राव आता है तथा पशु मरने लगते हैं। संक्रमण के पश्चात रोगी पशु की आँखों, नासिका और मुख के स्त्रावों तथा मल में भी काफी मात्रा में पी॰पी॰आर॰ विषाणु उत्सर्जित होते हैं। जिन पशुपालकों के पास बकरी एवं भेड़ दोनों साथ रहते हैं, बकरियों में इनके लक्षण अधिक भयानक रूप दिखाते हैं।

यदि बकरी अथवा भेड़ में उपरोक्त लक्षण दिखे तो पशुपालक को समझ लेना चाहिए कि महामारी का प्रकोप हो सकता है। इस स्थिति में अन्य स्वस्थ बकरियों / भेड़ों को इस बीमारी से बचाव एवं रोकथाम के कारगर उपाय करने चाहिए।

संपादक :
डा॰ रत्नेश कुमार झा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, मांझी, सारण

संकलन :
डा॰ प्रकाश चन्द्र हिमांशु
पशुपालक वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केन्द्र, मांझी, सारण

बकरी पालन - लाभकारी व्यवसाय

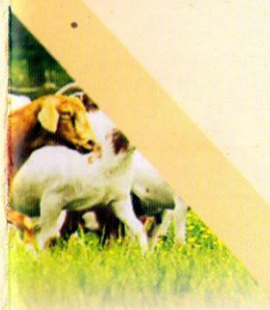

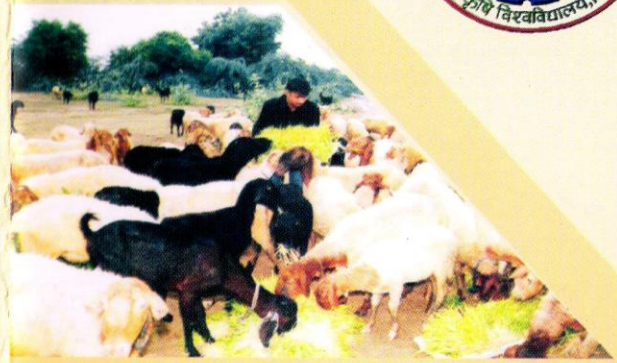

कृषि विज्ञान केन्द्र, माँझी, सारण
राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर-848 125 (बिहार)

बकरी पालन - लाभकारी व्यवसाय

बकरी की भारतीय नस्लों का प्रादुर्भाव प्रकृति द्वारा विशिष्ट जलवायु एवं परिस्थितियों के अनुकूलन से हुआ है। यहाँ पाई जाने वाली अधिकांश नस्ल कठिन, जलवायु, कटिबंधीय बीमारियों, अल्पापोषण व पानी की कमी जैसे विषम परिस्थितियों के लिए पूर्णतया अनुकूलित हैं। भारत में बकरियों की 20 प्रमुख नस्लें हैं। ये मोटे तौर पर दुधारू नस्लें, द्वि-उद्देश्यीय नस्लें एवं ऊन वाली नस्लों के रूप में विभाजित की गई है।

दुधारू नस्लें : सिरोही, बरबरी, सूरती, मेहसाना, सानेन, एल्पाइन।

मांस वाली नस्लें : ब्लैक बंगाल, गद्दी, आसाम, हिल, गंजमम, नूबियम।

द्वि-उद्देश्यीय नस्लें : जमुनापारी, बीटल, ओरमानाबीदी, मालाबारी, कामोरी।

ऊन वाली नस्लें : पश्मीना, अंगोरा।

खाद्य एवं कृषि संगठन 2007 के आँकड़ों के अनुसार विश्व में बकरियों की संख्या 85.02 करोड़ है, जिनमें से 12.54 करोड़ बकरियाँ भारत में हैं जो कुल आबादी का 14.75 प्रतिशत है।

बकरी पालन से लाभ :

1. कम पूँजी की आवश्यकता 2. रखने के लिये कम स्थान की आवश्यकता 3. कम मात्रा में चारे-दाने की आवश्यकता 4. कम आयु पर प्रजनन शुरू करने के गुण 5. प्रत्येक ब्याँत में औसतन एक से अधिक बच्चे देना 6. विशेष आवास की आवश्यकता नहीं 7. कम गुणवता वाले चारे को पचाने की अद्‌भुत क्षमता 8. सभी प्रकार की जलवायु में सफलतापूर्वक अनुकूलन की क्षमता 9. कम लागत के कारण कभी भी खरीद एवं बिक्री की सुविधा 10. बकरी के मांस की स्थानीय स्तर पर अच्छी बिक्री होना 11. कम जोखिम।

आवासीय आवश्यकताएँ :

क्र.सं.	बकरियों की आयु	बाड़े की आवश्यकता (वर्ग मी०)	
		ढकी	खुली
1	3 महीने तक	0.2 - 0.3	0.4 - 0.6
2	4 - 9 महीने तक	0.6 - 0.75	1.2 - 1.5
3	10 - 12 महीने तक	0.75 - 1.0	1.5 - 2.0
4	वयस्क	1.5 - 2.0	3.0 - 4.0
5	गाभिन एवं दूध देने वाली	1.5	3.0

बकरियों में टीकाकरण : बकरियों में मुख्य रोगों जैसे पी० पी० आर० मुँहपका - खुरपका, पकड़िया (ई०टी०), चेचक का टीकाकरण होता है।

क्र.सं.	रोग	टीकाकरण का समय		
		प्रथम	बुस्टर	अर्द्धवार्षिक/ वार्षिक
1	मुँहपका-खुरपका (एफ.एम.डी.)	3 माह पर	प्रथम टीका के 3-4 सप्ताह बाद	हर 6 माह पर
2	पी० पी० आर०	4 माह पर		4 वर्ष बाद
3	चेचक	3-5 माह पर	3-4 सप्ताह बाद	वार्षिक

डिवर्मिंग (कृमिकरण) : डिवर्मिंग व टीकाकरण आदि का खर्च रुपये 25 प्रति वयस्क तथा रुपये 15 प्रति बच्चा।

क्र.	इनफेस्टेशन	उम्र	बूस्टर
1	काक्सिडियोसिस	1-2 माह	पाँच दिन तक
2	अन्तः परजीवी	15-30 दिन पर उसके 3 सप्ताह बाद	वर्षों से पहले व बाद
3	बाह्य परजीवी	बाह्य परजीवी	वर्षा से पहले व बाद

विपणन :

बकरी व इसके उत्पादों की माँग बाजार में लगातार बढ़ रही हैं। मांस, दूध, खाल के अतितिक्त अच्छी प्रजनक बकरियों की भी भारी माँग है। नर बच्चे ईद, होली आदि त्योहारों के लिए तैयार किये जाते हैं।

बकरी बीमा :

बकरी पालन पर होने वाले कुल निवेश का मुख्य भाग प्रजनक बकरियाँ की खरीद पर आती है। विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पशुओं की हानि की संभावना इस व्यवसाय का मुख्य जोखिम है। अतः जोखिम को कम करने के लिए आवश्यक है कि व्यवसाय को आरंभ करते ही सभी प्रजनक पशुओं का बीमा करा लिया जाए।

भारत में बकरी एवं भेड़ पालन गरीब पशु पालकों की आजीविका के प्रमुख साधन हैं। संक्रामक बीमारियों में पी०पी०आर० (महामारी) का प्रकोप तथा इनसे अत्याधिक मृत्युदर किसानों एवं पशुपालकों की प्रमुख समस्या है।